موضوع الخطبة: كورونا–الداء والدواء

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

उपदेश का शीर्षक:

कोरोना- रोग एवं उपचार

प्रथम उपदेश:

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله .

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त (नवाचार) हैं और प्रत्येक बिदअ़त (नवोन्मेष) गुमराही है और हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ)

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا)

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا)

- ए मुसलमानो अल्लाह का तक़्वा अपनाओ और उस्से डरते रहो।उसकी आज्ञा कारी करो और उसके अवज्ञा से बचो और जानलो कि अल्लाह अपने दासों पर जो भी अच्छाई व बूराई,खुशहाली व तंगहाली करता है,वह प्रामर्श पर आधारित होता है,उन प्रामर्शों में से यह भी है कि आज्ञा करने और अवाज्ञा से बचने में वह कितना धैर्य से काम लेते हैं,उनकी आज़माईश,एवं अल्लाह तआ़ला उन पर जान व माल एवं फल और खाद्य की कमी दे कर के उनके धैर्य को आज़माता है,अल्लाह का कथन है:

(وَنَبْلُوكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ)

अर्थातः हम तुम में से प्रत्येक को बुराइ व भलाई देकर आज़माते हैं और तुम सब हमारे ही ओर लौट के आओगे।

अर्थात: हम धनी एवं गरीबी, प्रतिष्ठा व अपमानिता, जीव एवं मृत्यु, स्वास्थ्य एवं रोग और महामारी व शांति के माध्यम से तुम्हारी परीक्षा लेते हैं, ताकि हमें यह ज्ञात हो सके कि तुम में से कौन शुभ कार्य करता है और कौन पापों में लत-पत रहता है एवं इस भाग्य से अल्लाह का क्या उद्देश है उससे लापरवाह रहता है.

ए मोमिनो! यह आवरण नहीं कि वर्तमान काल में अल्लाह तआला ने संपूर्ण मनुष्यों पर जो महामारीयां अवतरित की हैं उनमें से एक महान रोग "करोना" की महामारी है. यह ऐसी महामारी है जिसके कारण लोगों के जीवन की दिनचर्या नष्ट हो गई उनकी मृत्यु हुई, मनुष्य के धन एवं जीवन को घाटा हुआ. इसलिए बुद्धिमान मुसलमानों को चाहिए कि वे.इससे कुछ सीख एवं पाठ प्राप्त करें क्योंकि यह महामारी ऐसे ही बिना किसी कारण के अवतरित नहीं हुई है अल्लाह इससे मुक्ति है. बल्कि अल्लाह ने महान बुद्धिमत्ता के कारण इसे अवतरित किया जिसे अल्लाह ने क़ुरआन में अनेक स्थानों पर वर्णन किया है, और वह यह है कि लोग पापों एवं अवज्ञाओं में समा चुके हैं, इस कारणवश अल्लाह ने उन्हें संसार में ही उदाहरण स्वरूप उनके कार्यों का बदला दिखा दिया ताकि वे उन कार्यों को छोड़ दें

जिनके कारण उनके जीवन में उथल-पुथल हो रही है ताकि उनकी स्थिति अच्छी हो जाए और वे सीधे मार्ग पर आ जाएं. अल्लाह का कथन है:

(ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ)

अर्थात: " धरती एवं समुद्र में मनुष्य की एक रण आत्मक कार्यो के कारण भ्रष्टाचार फैल गया है इसलिए कि अल्लाह ताला उन्हें उनके दुष्ट कर्मों का फल चखा दे, हो सकता है वह सुधर जाएं."

(وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ)

अर्थात: तुम्हें जो कुछ कठिनाइयां पहुंचती हैं वह तुम्हारे अपने ही कर्मों का फल है एवं वह तो बहुत सारी बातों को क्षमा कर देता है.

ज्ञात हुआ कि इस सामान्य महामारी का कारण यही अभद्रता एवं अवज्ञा है, जबकि अवज्ञाकारी मनुष्य बिना किसी भय के इन दृश्यों को प्रदर्शन कर रहा है, पत्रकारिता भ्रष्ट है, उसकी है इसके अंदर नाच-गाने, बुराई, दीन एवं दीन के आज्ञाकार्यों का मज़ाक़ उड़ाना सामान्य बात हो चुकी है. यहां तक कि रमाज़ान में भी इससे बचा नहीं जाता है, ब्याजी व्यापार एक सामान्य बात हो चुकी है जिसे बुराई व भ्रष्ट तक नहीं समझा जाता है. व्यापारीक स्थानो एवं बाजारों में नग्नता, नंगापन पुरुषों एवं महिलाओं का मिलाप अपनी चोटी पर है. महिलाएं आवरण के प्रति लापरवाही कर रही हैं उत्तेजक नक़ाबों की तो चर्चा ही न करें, जो चमकीली एवं अनंत तंग होते हैं. नमाज़ के समय में सोए रहना, मस्जिदों से दूरी अपनाना नमाज़ों के समय में क्रिय-विक्रय करने में मगन रहना ऐसे कार्य हैं जिन पर जितनी भी निंदा की जाए कम है. तो क्या इन पापों के पश्चात भी हम हमारी का अवतरित होना कोई चौंका देने वाली बात है??

● अल्लाह के दासो! अल्लाह तआला जिन बुद्धिमत्ता ओं के कारण रोगों एवं महामारियों को अवतरित करता है उन में यह भी सम्मिलित है कि दास के हृदय का संबंध अल्लाह से हो जाए. वह याद रखें कि जिस आशीर्वाद एवं धन से लाभ उठा रहे हैं वह अल्लाह तआला का दिया हुआ निर्वाह है जिन्हें अल्लाह तआला किसी भी क्षण में पलट सकता है इस को याद करके दास अल्लाह की आज्ञा का पालन करता है एवं अवज्ञा से दूर रहता है ताकि उसका आशीर्वाद नष्ट ना हो. क्योंकि जब आशीर्वाद पर आभार व्यक्त किया जाता है तो वह सुरक्षित रहते हैं अन्यथा वह नष्ट एवं बर्बाद हो जाते हैं.

● रोबोट एवं महा मारियो को प्रकट करने में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी होती है कि इसके माध्यम से लापरवाह एवं अवज्ञाकार तो अनुस्मारक कराई जाती है ताकि वे अपने पालनहार की ओर पलटा अपने बनाने वाले से क्षमा चाहे और यह ज्ञात रखे कि उनका पालनहार जो उनकी देख-रेख कर रहा है, वह पापों के कारण दंडित करता है.अल्लाह का कथन है:

(وَبَلَوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ)

अर्थात: " हम उन्हें समृद्धियों एवं कठिनाइयों के माध्यम से परीक्षा लेते हैं हो सकता है वह दूरी अपना लें."

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला का कथन है:

(فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا)

अर्थात: " जब उनको हमारा दंड पहुंचा था तो वे नम्र क्यों नहीं हुए? "

● इस महामारी के पीछे अल्लाह तआला की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि कुछ अवज्ञाकार दासों के हृदय की कठोरता बेनक़ाब हो गई जो इस महामारी के युग में भी पापों में लत-पत रहे शैतान उनके लिए अवज्ञाओं को सुंदरता के साथ प्रस्तुत करता

रहा यहां तक कि वह गुमान करने लगा कि वह पूर्ण का कार्य कर रहा है, एवं संसार के उथल-पुथल एवं कठिनाइयों में गिर जाने में उनके कर्मों का कोई योगदान नहीं है इन अवज्ञाओं एवं लापरवाहीयों के बावजूद अल्लाह तआला परीक्षा लेने के लिए उन्हें कुछ देता है एवं आशीर्वाद के द्वार खोल देता है ताकि वे अकस्मात पकड़ में आ जाएं. अल्लाह का कथन है:

(سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ)

अर्थात: " हम इस प्रकार उन्हें धीरे-धीरे खींहचेंगे कि उन्हें ज्ञात भी नहीं होगा मैं उन्हें ढील दूंगा नि: संदेह मेरा उपाय बहुत शक्तिशाली है."

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

(فَلَمَّا نَسُــــوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَــــيْءٍ حَتَّى إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ)

अर्थात: " जब उन्होंने इस संदेश को ठुकरा दिया तो हमने उन पर हर प्रकार के द्वार खोल दिए यहां तक कि जब उन चीजों से जो उनको प्रदान की गई थी अधिक प्रसन्न हो गए तो हमने उनको अकस्मात दबोच लिया और वे उस समय निराश होकर रह गए. "

(وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْــتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَــرَّعُونَ حَتَّى إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَــدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ)

अर्थात: हमने उन्हें यातना में भी पकड़ लिया फिर भी यह लोग अपने पालनहार के समक्ष झुके और ना ही नम्रता को अपनाया यहां तक कि जब हमने उन पर कठिन यातना का द्वार खोल दिया तो उसी समय तुरंत ही वे निराश हो गए.

अर्थात: वे अल्लाह की कृपा से निराश हो गए.

- रोगों एवं महामारयों के अवतरित करने में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि उन पर धीरज एवं परिणाम की गणना करने वालों एवं (अल्लाह के भाग्य) पर अपनी सहमति दिखाने एवं घबराहट से दूर रहने वालों के लिए पूण्य संकलन होते हैं. नबी सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम का वर्णन है:

" मोमिन की भी अजब परिस्थिति है! उसका पुण्य किसी भी स्थिति में नष्ट नहीं होता, यह उपहार मोमिन के अतिरिक्त किसी को भी प्राप्त नहीं. अगर उसे प्रसन्नता होती है तो वह आभारी होता है इसमें भी पूण्य है एवं जब उसको हानि पहुंचती है तो वह धीरज रखता है इसमें भी पूण्य है 1.(मुस्लिम :२९९)

अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू से मर्वी है कि रसूल सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम ने फ़रमाया: " मोमिन पुरुष एवं मोमिन महिला का जीवन, संतान, एवं संपत्ति की परीक्षा होती रहती है यहां तक की जब वे मृत्यु के पश्चात अल्लाह से भेंट करते हैं तो उन पर कोई पाप नहीं रहता."

(इसे तिर्मीज़ी:२३९९ ने रिवायत किया है, एवं उल्लेख किए हुए शब्द इन्हीं के हैं, तिर्मीज़ी ने कहा है यह हदीस हसन है. इनके अतिरिक्त इस हदीस को अहमद:७८५९ ने भी रिवायत किया है देखें: अल-सिलसिला अल-सहीहा:२२८०)

- इस महामारी में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि इस छोटे से महामारी से मनुष्य की दुर्बलता एवं विनम्रता दिख चुकी है, इसलिए यह गिरोह जो प्रगति एवं उन्नति, सभ्यता, प्रौद्योगिकी, अविष्कार एवं नए-नए खोज में एक महान स्थान पर है वह इस छोटी सी महामारी के समक्ष आश्चर्य पूर्वक अपनी दुर्बलता को प्रदर्शित करती है कितने ऐसे देश हैं जिनका दावा है कि (हमसे ज़्यादा

शक्तिशाली कौन है?) लेकिन इस महामारी के समक्ष उनकी शक्ति दुर्बलता की ओर जाती दिखाई दी, दूसरों से लापरवाह होकर अपने में ही व्यस्त हो कर रह गए. अल्लाह तआला का सत्य वर्णन है:

(وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِنْ دَارِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ)

अर्थात: " कुफ़्फ़ार को उनके कुफ़्र के बदले सदैव कोई न कोई कठोर यातना पहुंचती रहेगी या उनके गृहों के निकट प्रकट होती रहेगी जब तक कि अल्लाह का वचन आ पहुंचे. नि: संदेह अल्लाह अपने वचन के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करता."

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

(فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهِ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَنْ أَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ)

अर्थात: " फिर तो प्रत्येक को हमने उसके पाप की कठिनाई में दबोच लिया. उनमें से कुछ पर हमने पत्थरों की वर्षा की, उनमें से कुछ को शक्तिशाली कठोर ध्वनि ने पकड़ लिया, उनमें से कुछ को हमने धरती के भीतर धंसा दिया, एवं उनमें से कुछ को हमने डुबो दिया. अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि उन पर अत्याचार करे बल्कि यही लोग अपनी प्राणों पर अत्याचार करते हैं."

अधिक फ़रमाया:

(وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا)

अर्थात: " हमने बहुत सारी वह बस्तियां नष्ट कर दी जो अपने विलासिता में इतराने लगी थी."

- ऐ मुसलमानो! आश्चर्यजनक बात यह है कि कुछ मनुष्य उम्मत को पहुंचने वाली इस महामारी को को केवल भौतिक कारण की ओर फेरते हैं, जैसे

बायोटिक्स लेने या इस महामारी को उसके उत्पन्न होने के स्थान में घेरे रखने में आलस्यात्मिक का परिचय देना. और इस प्रकार के कारण वे मनुष्य दोहराते रहते हैं जो भाग्य पर विश्वास नहीं रखते हैं. इसमें कोई संदेह नहीं कि यह एक अधूरी भौतिकवादी सिद्धांत है और ज्ञान एवं विश्वास की कमी को दर्शाता है क्योंकि अल्लाह तआला ने ही इस महामारी को प्रकट किया और सिर्फ उसी के हस्त ने इसका समाप्त करना भी है क्या उन्होंने अल्लाह ताला के इस वर्णन को नहीं सुना:

(أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَى أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُـــنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَى أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُـــنَا ضُـــحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ)

अर्थात: " क्या फिर भी उन बच्चियों के बसने वाले इस बात से लापरवाह हो गए कि उन पर हमारी यातना रात्रि के समय आ पड़े जिस समय वे सोते हैं और क्या उन बस्तियों के बसने वाले इस बात से लापरवाह हो गए हैं कि उन पर हमारी यातना दिन चढ़ेया पड़े जिस समय कि वे अपने खेलों में व्यस्त हों. क्या वे अल्लाह की उस पकड़ से बेपरवाह हो गए? अल्लाह की पकड़ से उन मनुष्यों को छोड़कर जिन पर तबाही आ ही गई हो और कोई बेपरवाह नहीं होता."

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

(قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ)

अर्थात: " आप कहिए कि उस पर भी वही शक्ति रखता है कि तुम पर कोई यातना तुम्हारे ऊपर से भेज दे या तुम्हारे पैर के नीचे से या कि तुम को सामूहिक स्तर

पर सब के बिच भिड़ंत करा दे और तुम को एक को दूसरे का युद्ध चखा दे आप देखिए तो सही हम किस तरह सिद्धांतों के अलग-अलग दृष्टिकोण को बयान करते हैं हो सकता है वह समझ जाएं."

- इस महामारी में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि जिन लोगों को अल्लाह तआला ने मुस्लिम शासकों की आज्ञाकारिता करने, एकजुटता बचाए रखने, पंक्तियों को एकजुट रखने एवं शासक और प्रजा के बीच प्रेम बचाए रखने के कारण (इस महामारी) से सुरक्षित रखा. जैसे गृहों में रहना, घूमने फिरने से दूर रहना, सावधानी कारणों एवं सुरक्षा पूर्वक उपायों और स्वास्थ संबंधी निर्देशों पर चलना, ताकि इस महामारी के शिकार ना हो. (इन कारणों से प्राप्त होने वाले) स्वास्थ्य एवं सुरक्षा में जो महान बुद्धिमत्ता थी वह सामने आ गई.

- अल्लाह के दासो! अल्लाह को याद रखो उसका भय अपनाओ एकांत एवं ग्रुप में उसकी निगरानी को बुद्धि जीवित रखो, किसी भी स्थिति में उससे लापरवाह मत हो उसकी अवज्ञा में लत-पत मत रहो, अल्लाह का कथन है:

(وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ)

अर्थात: " ज्ञात रखो कि अल्लाह तआला को तुम्हारे हृदय की बातों का ज्ञात है. तुम उससे डरते रहो

जिस ज़ात ने हमारे आस-पास के मनुष्यों के लिए इस महामारी का शिकार होना सुनिश्चित किया वह इस बात की भी शक्ति रखता है कि हमें भी उसके अंतर्गत ले ले. इसलिए पूर्णत: पापों से सत्य हृदय के साथ क्षमा मांगें. क्षमा ही इस महामारी से छुटकारा पाने की चाबी है. जैसा कि रिमाद के वर्ष सन १८ हिजरी में जब मनुष्य

सूखे पन के शिकार हुए तो उमर रज़ि अल्लाहू अन्हों ने किया. वह लोगों के संग इसतिसक़ा की नमाज़ (वह नमाज जिसके माध्यम से वर्षा की दुआ मांगी जाती है.) के लिए निकले और प्रार्थना की:

(اللهم ما نزل البلاء إلا بذنب، ولم يكشف إلا بتوبة، وهذه أيدينا إليك بالذنوب، ونواصينا إليك بالتوبة)

अर्थात: " हे अल्लाह पाप के कारण ही दु: ख प्रकट होते हैं, तौबा से ही वह दूर होते हैं हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तेरे द्वार में अपने हस्त उठाए हुए हैं और हमारे माथे तौबा के साथ तेरे द्वार पर झुके हुए हैं.

- अल्लाह ताला मुझे और आप को क़ुरआन की बरकत से मालामाल करें मुझे और आप सबको इसके श्लोकों और बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए प्रत्येक पाप से क्षमा मांगता हूं आप भी उस से क्षमा की प्रार्थना करें नि: संदेह क्षमा मांगने वालों को अधिक क्षमा देता है.

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى' أما بعد:

ए मुसलमानो!कोरोना आपदा व अन्य महामारियों व दुष्टताओं से बचने के सात महत्वपुर्न कारण एवं साधन हैं:

प्रथमःअल्लाह पर विश्वास,इस का मतलब ये है कि आपदाओं व दुष्टताओं से बचने के जो हिस्सी कारण हैं,उनको अपनाने के साथ अल्लाह पर विश्वास रखा जाए,अल्लाह का कथन है:

(وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ)

अर्थातः जो व्यक्ति अल्लाह पर विश्वास करेगा अल्लाह उसके प्रति प्रयाप्त हो जाएगा।

द्वितीयः यह जान्ना और मान्ना कि इस आपदा व अन्य कठिनाइयों का घटना और उस्से संक्रमित होना और इस से सुरक्षित रहना सब अल्लाह की तक़दीर से होता है,यदि मनुष्य समस्त आंतरिक एवं **बाह्य** कारणों को अपनाले,और अल्लाह तआ़ला ने उसकी तक़दीर में यह लिखा हो कि वह इस से संक्रमित होके रहेगा तो वह अवश्य इस से संक्रमित होगा,अल्लाह का कथन हैः

(وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ)

अर्थातःयदि तुमको अल्लाह कष्ट पहुंचाए तो उसके अतिरिक्त और कोइ उसको दूर करने वाला नहीं।

तृतीयःअधिक प्रार्थना करना,अल्लाह का कथन हैः

(أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ)

अर्थातःक्या अल्लाह अपने दास के लिए काफी नहीं?

इस आयत के अंदर अल्लाह ने दास के लिए समस्त आपदाओं एवं दुष्टताओं से अपनी प्रयापति को उसकी पूजीय विषेश्न से जोड़ा है, तो जो व्यक्ति अधिक प्रार्थना करेगा उसे आपदा व दुष्टता से उतना ही अल्लाह की प्रयाप्ति हासिल होगी।

चौथाः आपदा व दुष्टता से अल्लाह की प्रयाप्ति को हासिल करने का एक कारण यह है कि सच्चे दिल से अल्लाह पर विश्वास रखा जाए,इस का मतलब यह है कि आपदा व दुष्टता से बचने के लिए ज़ाहेरी कारणों को अपनाने के साथ दिल से अल्लाह पर विश्वास रखा जाए,अल्लाह का कथन हैः

(وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ)

अर्थातःजो व्यक्ति अल्लाह पर विश्वास रखेगा अल्लाह उसके लिए काफी होजाएगा।

पांचवाँःआपदा एवं दुष्टता से अल्लाह की प्रयाप्ति हासिल करने का एक कारण यह है कि पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम पर अधिक से अधिक दरूद भेजा जाए,इसका प्रमाण यह है कि कअ़ब रजिअल्लाहु अनहु ने आप सल्लाहु अलैहे वसल्लम से कहा कि वह आप पर अधिक से अधिक दरूद भेजैंगे यहां तक कि उनकी अधिकतर प्राथना दरूद से ही भरी होगी तो आप ने फरमायाः''अब यह दरूद तुम्हारे सारे ग़मों के लिए प्रयाप्त होगा और इस्से तुम्हारे पाप मिटा दिए जाऐंगे'' 3 (इसे तिरमीज़ी ने2407 रिवायत किया है और अल्बानी ने हसन कहा है।)

छठाः आपदा व दुष्टता से अल्लाह की प्रयाप्ति व सुरक्षा प्राप्त करने का एक कारण यह भी है कि चाश्त के समय चार रकअ़त नमाज़ अदा की जाए,प्रत्येक दो रकअ़त पर सलाम फेरा जाए,इसका प्रमाण हदीसे क़ुदसी में अल्लाह का कथन हैः

''ए मनु के संतान!तुम दिन के प्रारंभ में मेरी प्रशंसा के लिए चार रकअ़तें पढ़ा कर,में पूरे दिन भर के लिए तुम्हारे लिए काफी हुंगा।''

(इसे तिरमीजी 2407 ने अबूदाऊद रजिअल्लाहु अनहु से वर्णन किया है और अल्बानी ने इसे सही कहा है।)

''पूरे दिन के लिए तुम्हारे लिए काफी हुंगा''का मतलब यह है कि पूरे दिन जो आपदाऐं एवं दुर्घटना घटते हैं,उनसे तुम्हें सुरक्षित रखुंगा।

सातवाँःआपदा व दुष्टता से अल्लाह की प्रयाप्ति हासिल करने का एक कारण यह भी है कि सुब्ह व शाम के अज़कार का पालन किया जाए,जिन में कुछ का उल्लेख निम्नलिखित में हैंः

- सूरह अख़लास व मउुज़तैन सुब्ह व शाम तीन तीन बार पढ़ना,इसका प्रमाण पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम की यह ह़दीस है जो आप ने अबदूल्लाह बिन खोबैब बिन अ़दी रजिअल्लाहु अनहु से फरमाया किः

सुब्ह व शाम तीन बार «قل هو الله أحد» «المعوذتين» :«قل أعوذ برب الفلق» «قل أعوذ برب الناس»

पढ़ लिया करो,यह ''सूरतें'' तुम्हें हर दुष्टता से बचाऐंगीं और सुरक्षित रखेंगीं''

(इसे अबूदाऊद 5082 आदि ने वर्णन किया है और अल्बानी ने सही कहा है।)

- अबदूल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहु अनहुमा फरमाते हैं किः रसूल सल्लाहु अलैहे वसल्लम सुब्ह व शाम इन प्रार्थनाओं को कभी नहीं छोड़ते थेः

«اللهم إني أسـألك العفو والعافية في الدنيا والآخرة اللهم إني أسـألك العفو والعافية في ديني ودنياي وأهلي ومالي اللهم اسـتر عوراتي وآمن روعاتي واحفظني من بين يدي ومن خلفي وعن يميني وعن شمالي ومن فوقي وأعوذ بك أن أغتال من تحتي»

''ए अल्लाह में तुझसे दुनया व आखेरत में आफियत का सवाली हूं, ए अल्लाह में तुझसे अपने दीन व दुनया और अपने परिवार व संपत्ति में छमा एवं आफियत का सवाली हूं,मेरे ऐबों को

छिपा दे,दाऐं बाऐं,और उपर से मेरी सुरक्षा फरमा,और में तेरा शरण चाहता हूं नीचे से नाश किये जाने से''

(इसे अबूदाऊद 5074 और इब्ने माजा 3871 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सही कहा है।)

- शाम के समय पढ़ी जाने वाली प्रार्थनाओं में यह भी है कि शाम ढ़लते ही सूरह बक़रा के अंत की दो आयतें पढ़ी जाऐं,क्योंकि आप सल्लाहु अलैहे वसल्लम की ह़दीस हैः''सुरह बक़रा के अंत की दो आयतें जो रात में पढ़ेगा,तो वह दोनों आयतें उसके लिए काफि होंगी''

(इसे बोखारी 4008 और मुस्लिम 807 ने अबूदाऊद से वर्णन किया है।)

- जो प्रार्थनाऐं एक मुस्लिम व्यक्ति को घर से निकलने के पश्चात ''अल्लाह के आदेश से''सुरक्षित रखती हैं,उनमें घर से निकलने के पश्चात की प्रार्थना भी है,अनस रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है कि रसूल सल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमायाः जब मनुष्य घर से निकले फिर कहेः

«بسم الله توكلت على الله لا حول ولا قوة إلا بالله»

''अल्लाह के नाम से निकल रहा हूं,मेरा पूरा पूरा विश्वास अल्लाह ही पर है,समस्त शक्ति अल्लाह ही की ओर से है'' तो आप ने फरमायाः उस समय कहा जाता है''अर्थात देवदूत कहते हैं'':अब तुझे हिदायत दे दी गई,और तू बचा लिया गया,''यह सुन कर''शैतान उस्से अलग हो जाता है,तो उस्से दूसरा शैतान कहता हैः तेरे हाथ से आदमी केसै निकल गया कि इसे हिदायत दे दी गई,उसकी ओर से काफी करदी गई और वह ''तेरी गिरफत और तेरे चंगुल से ''बचा लिया गया?''

(इसे अबूदाऊद 595 ने रिवायत किया है और शोऐब अरताऊत ने ''अलतालीक़ अला सोनने अबि दाऊद''में इसे ह़सन कहा है।)

इन अज़्कार में यह भी है कि सवेद अल्लाह से आफियत व सलामति मांगी जाऐ,अबू बकर **सिद्दीक़** रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमायाःअल्लाह से पापों की क्षमा और कठिनाइयों और गुमराहियों से आफियत मांगो क्योंकि ईमान व विश्वास रखने के पश्चात किसी बंदे को आफियत अथवा शांति से अच्छा कोई चीज नहीं दी गई''

(इसे अबूदाऊद 3849 आदि ने रिवायत किया है और शैख शोऐब अरदाऊद ने ''अलतालीक़ अला सोनने अबि **दाऊद**''में इसे हसन कहा है।)

पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम दोआऐ क़ोनूत में यह भी पढ़ा करते थेः

"وعافني فيمن عافيت"

अर्थातः आफियत प्रदान कर उन लोगों में शामिल फरमा कर जिन्हें तू ने आफियत दी है।

(इसे अह़मद 1/199 ने वर्णित किया है और अलमुस्नद के शोधकर्ताओं ने ह़दीस संख्या 1718 के अंतर्गत इसे सह़ी कहा है)

इसके अतिरिक्त यह भी प्रार्थना करते थे किः

«اللهم إني أعوذ بك من زوال نعمتك، وتحول عافيتك، وفجاءة نقمتك، وجميع سخطك»

अर्थातः ए अल्लाह! में तेरी नेमत की समाप्ति से,तेरे प्रदान की हूई आफियत की समाप्ति से,तेरी अचानक के यातना से और तेरे प्रत्येक प्रकार के क्रोध से तेरा शरण चाहता हूं।

(इसे मुल्सिम 2736 ने अबदूल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहु अनहु से रिवायत किया है।)

बीमारियों से पनाह मांगने के विश्य में जो अज़कार हैं,उन में अनस रजिअल्लाहु अनहु की हदीस भी है कि पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम यह प्रार्थना किया करते थे:

«اللهم إني أعوذ بك من البرص، والجنون، والجذام، ومن سيئ الأسقام»

अर्थातः ए अल्लाह! में तेरा शरण चाहता हुं कुष्ठ ,पागलपन,कोढ़ और समस्त प्रकार के रोग से''

(इसे अह़मद 3/192 ने रिवायत किया है और अलमुसनद के शोधकर्ताओं ने कहा किःइस की सनद सह़ी मुस्लिम की शर्त पर है।)

- आपदा व दुष्टता से प्राप्ति व रक्षा से संबंधित जो अज़कार ह़दीस में आए हैं,वे बहुत अधिक हैं,जो प्रार्थना की पुस्तकों में उल्लेखित हैं,जैसे इब्ने तैमिया की पुस्तक ''अलकलिम अलत**य्यब**'' नौवी की पुस्तक''अलअज़कार''और क़ह़तानी की पुस्तक''अलहिस्न अलमसलिम'' आदि।

سبحان خالق كورونا ومرسِله	على العباد يريهم كيف هم ضعفا
فيروس ليس يرى بالعين من صغر	لكن بأكثر سكان الدنا عصفا
كم اقتصاد هوى من بعد رفعته	وكم حراك على ذي الأرض قد وقفا
وعطل الناس عن سعي وعن سفر	رهن البيوت كقُفص لازم الصدفا
(أن لا مساس) شعار الناس من قلق	كل يحاذر من لمس له تلفا
كم أمة أصبحت في عيشها شظفا	كانت تبختر في نعمائها ترفا
حتى الحبيبان عن بعد سلامهما	مثل الشحيح زوى الكفين والكتفا
سبحان خالق كورونا ومرسله	مخوِّفا خلقه من بأسه أسفا
لعلهم أن يفيقوا بعد غفلتهم	ويخلعوا الكبر والطغيان والأنفا
لعلهم أن يحسوا نعمة كفرت	كم من نعيم نُسِي من طول ما ألفا
لعلنا أن نرى حلم الكريم بنا	فلو يشاء بنا في لحظة خسفا
يا رب عجل بيسر بعد ما عسرت	وافرج علينا فشهر الصوم قد أزفا

(यह पंक्तियां डा0 अ़ली बिन यह़या अलह़द्दादी के हैं,अल्लाह उन्हें अच्छा बदला दे।)

अर्थात:पवित्र है वह हसती जिस ने कोरोना को पैदा किया और बंदों के पास भेजा ताकि उन्हें देखा सके कि वह कितने निर्बल हैं।एक ऐसा विषाणु जो एतना छोटा है कि आंखों से देखा भी नहीं जा सकता,फिर भी उसने संसार के अधिकतर मनुष्यों को झनझोड़ कर रख दिया। कितने ही एसे अर्थव्यवस्था हैं जो बढ़ने के पश्चात घट गऐ,संसार ही की कितने ही एसी गतिविधियां हैं जो ठहर गईं। लोगों ने दौड़ भाग और यात्रा को निलंबित कर दिया,वे घरों में नजरबंद होकर रहगए जिस प्रकार मोती अपने सीप में रहता है। भय से लोगों का यह प्रचलन बन गया कि कोई किसी को न छूए,हर किसी को यह डर लगा हुआ है कि छूने से कहीं उसे हानी न पहूंच जाए। केतने ही एसे समुदाय हैं जिनका जीवन तंग और कठिन होगया,जबकि वह खुशहाली में घमंडी और ऐश का जीवन बसर कर रहे थे।यहां तक कि दो प्रेमी भी दूर से ही एक दूसरे को सलाम करते हैं,उस कंजूस के जैसा जो अपने हथलियों और बाहों को खरच करने के डर से समेट कर रखता है।पवित्र है वह हसति जिस ने कोरोना को पैदा किया और उसे बंदों के पास भेजा,ताकि वह जीव को अपनी पकड़ और करोध से डरा सके।शायद वह गफलत के पश्चात होश के नाखुन लें और घमंड,हटधरमी और अहंकार की चादर उतार फेकें। शायद कि वह इस नेमत को महसूस कर सकें जिस की नाशुकरी की जाती रही है,केतने ही एसी नेमते हैं जो लंबे

अवधि तक प्राप्त रहने के कारण भूला दी गईं। आशा है कि हम अपने प्रति दयालू व दाता पालनहार के धैर्य रूप देखें,यदि वह चाहे तो पलक झपकते ही धरती में धंसा दे। ए पालनहार! कठिनाई के पश्चात फौरन ही हमें आसानी प्रदान कर और हमारी कठिनाईयों को दूर करदे कि रमज़ान का महीना निकट आ चूका है।

- ए अल्लाह के दासो! यह महामारी हमारे प्राणों को के लिए खतरनाक है,वह अति तेज़ी से फैल रहा है,क्योंकि जीवन एक नेमत है,अल्लाह ने अपने दासों को उनके आतमाओं पर अमीन बनाया है,जैसा कि पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम का कथन हैः ''निसंदेह तुम्हारे प्राणों का तुम्हारे उपर अधिकार है''

(इसे अह़मद 6/268 आदि ने ह़ज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अनहा से रिवायत किया है और अलमुस्नद के शोधकर्ताओं ने ह़दीस संख्या 26308 के अंतर्गत इसे ह़सन कहा है,इसका असल सहीहैन में अबू होज़ैफा रज़िअल्लाहु अनहु व अन्य सह़ाबा की रेवायत से उपलब्ध है।)

इसके अतिरिक्त यह भी जान लें–अल्लाह आप पर अपनी कृपा अवतरित करे–कि अल्लाह तआ़ला ने अपको एक बड़ी चीज़ का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थात: "अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत उस पैग़ंबर पर रह़मत (कृपा) भेजते हैं ए विशवासियो! तुम भी उन पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजते रहा करो।"

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:

अर्थात: " तुम्हारे पवित्र दिनों में से शुक्रवार का दिन है उसी दिन आदम (मनु) का जन्म हुआ उसी दिन उनकी रूह़ (आत्मा) निकाली गई उसी दिन सूर (तुरही) फूंका जाएगा 15(अर्थात तुरही दूसरी बार फूंका जाएगा माने वह तुरही है जिसमें इसरफ़ील फूंक मारेंगे, यह वह देवदूत हैं जिनको तुरही में फूंक लगाने का आदेश दिया गया है जिसके पश्चात समस्त जीव क़बरों से उठ खड़े हो जाएंगे।) उसी दिन चीख़ होगी। (अर्थात: जिससे सांसारिक जीवन के अंत में लोग मदहोश होकर गिर पड़ेंगे और समस्त जीव की मृत्यु हो जाएगी। यह मदहोशी उस समय उत्पन्न होगी जब सूर (तुरही) में सर्वप्रथम फूंक लगाया जाएगा ०२ फुंक के मध्य में ४० वर्षों का अंतर होगा।) इसीलिए उस दिन तुम लोग मुझ पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजा करो, क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।

(इसे नेसाई 1373,अबू**दाऊद** 1047,इब्ने माजा 1085, और अह़मद 4/8 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सही अबी **दाऊद** में और अलमुसनद के शोधकर्ताओं ने ह़दीस संख्या:16162 के अंतर्गत इसे स़ही कहा ह)

हे अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज, तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

हे अल्लाह! कठिनाईयॉ पापों के कारण ही जन्म लेती हैं और तौबा के माध्यम से ही दूर होती हैं,हम अपने पापों को स्वीकारते हैं और हमारे हाथ तेरे द्वार में उठे हूए हैं,हमारे सर तेरे द्वार में झुके हूऐ हैं, हे अल्लाह! तू हम से इस महामारी को दूर करदे, निसंदेह हम मुस्लमान हैं।

हे अल्लाह जिसका भी इस महामारी के कारण निधन होगया है उन पर कृपा फरमा और जो लोग इस के कारण रोगी हैं उनको स्वास्थ्य और पूण्य प्रदान कर! हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा! हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा! हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा!

हे हमारे पालनहार हमें दुनया व आखेरत की अच्छाई प्रदान कर और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा!

- سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

लेखक: माजिद बिन सुलेमान अलरसी

१४ रजब १४४२ हिजरी

जूबैल,सऊदी अरब

अनुवाद: फैज़ुर रह़मान हिफज़ुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com